परिवर्तन
PARIVARTAN
समेकित ग्रामीण समुदाय विकास हेतु तक्षशिला की पहल

तक्षशिला

हमार अंगना

अंक 7 | अर्द्धवार्षिक | पूर्व-स्कूल एवं अनौपचारिक शिक्षा पर परिवर्तन के प्रयासों का संकलन, आँगनबाड़ी केन्द्रों के लिए | अगस्त 2019

परिवर्तन बालघर आँगन द्वारा प्रकाशित की जाने वाली पत्रिका हमार आंगना के अंक 7 में आपका स्वागत है। आईये संक्षिप्त जानकारी लेते है बालघर आंगन के गतिविधियों के बारे में....।

बालघर आँगन :-

बालघर आंगन परिवर्तन परिसर में शिक्षा की एक छोटी इकाई है, जो लगातार 6 वर्षो से बच्चों एवं सेविकाओं की सेवा में तत्पर है। यहाँ आँगनबाड़ी केन्द्रों से 3 साल से 6 वर्ष के बच्चे आते हैं एवं बालघर आँगन के माध्यम से साल में कई बार सेविका प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया जाता है।

संकल्पना एवं उद्देश्य :- बचपन जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है, इस उम्र में बच्चे केवल खाना एवं खेलना जानते हैं। परन्तु बालघर का उद्देश्य है कि बच्चो को खेल-खेल एवं कविता, कहानी के माध्यम से शारीरिक, मानसिक एवं भाषा का ज्ञान कराया जा सके।

इसका नया स्वरुप :- बच्चों के सम्पूर्ण विकास के उद्देश्य से 2014 में बालघर आँगन की स्थापना की गयी। जिसमें दो पंचायतों के चार आँगनबाड़ी केन्द्रों से शुरूआत हुई। आज बालघर आँगन 7 पंचायतों के 46 आँगनबाड़ी केन्द्रों पर कार्यरत है, जिसमें क्रमबद्ध 16-16 आंगनबाड़ी केन्द्रों के बच्चो के साथ क्लास ली जाती है एवं विजिट (संपर्क) किया जाता है। प्रत्येक दिन चार-चार आँगनबाड़ी केन्द्रों के साथ दो शिफ्ट क्लास चलायी जाती है। साथ ही साथ योजनाबद्ध सेविका प्रशिक्षण कार्यशाला करायी जाती है।

बालघर आँगन के नए कार्यक्रम

स्वच्छता के प्रति बच्चों का उत्साह -

- स्वच्छता का हमारे जीवन में बड़ा महत्त्व है। कहा भी गया है कि स्वस्थ शरीर में ही ईश्वर का वास होता है। हमें हमेशा साफ़-सुथरा रहना चाहिए। अगर ये बात बच्चे समझ जाएँ तो उसके उज्जवल भविष्य और सेहत के लिए यह बहुत लाभप्रद साबित होगा। स्वछता के महत्त्व को समझाते हुए बालघर आँगन द्वारा बच्चों को सजग बनाने हेतु कई गतिविधियाँ करायी गयीं।
- हाथ की सफाई के महत्त्व को समझाते हुए बच्चों को बालगीत (क्या कहता है हनी सुनो) सिखाया गया।
- साबुन से बच्चों का हाथ धुलवा कर गन्दगी से होने वाली विभिन्न तरह की बीमारियों और सफाई के महत्त्व को समझाया गया।
- बच्चों को मिटटी के साथ खेल कराने के बाद कौन-कौन बच्चे सफाई के महत्त्व को समझ कर हाथ धोते हैं इसकी जाँच की गयी तथा बच्चों को अभिनय के साथ "कचरे का बादल" कहानी सुनायी गयी।
- घरौंदा द्वारा बच्चों को अपने घर तथा आस-पास साफ रखने के लिए कूड़ेदान का महत्त्व समझाया गया तथा बच्चों से कूड़ेदान बनवाया गया।

बच्चों की पसंद-

बालघर में लिये बच्चों का नामांकन 8 माह के लिये किया जाता है जिसमें 16 आँगनबाड़ी केन्द्रों के बच्चों को परिवर्तन बालघर में लाकर तथा 16 आंगनबाड़ी केन्द्रों पर जाकर क्लास ली जाती है। दोनों जगह गतिविधियाँ करायी जाती हैं, जिसमें प्रतिदिन दिनचर्या के साथ समय के अनुसार सेशन (सत्र) होते हैं। उसमें बच्चे एक्शन के साथ कविताएँ, कहानियां एवं म्यूजिकल आवाज सुनना बहुत पसंद करते हैं। साथ ही साथ झूला झूलना तथा बाहर के वातावरण में खेलना–कूदना बच्चे बहुत पसंद करते हैं। जब बच्चे अपने पसंद की गतिविधियों को पूरा करके अपने गाँव जाते है तो वो गाँव के अन्य बच्चों से अलग ही नजर आते है। उनमें उत्साह और आत्मविश्वास अधिक होता है। शायद इसी वजह से जब ये बच्चे बड़े भी हो जाते हैं तो उनके हर काम को करने का तरीका, दूसरों से बात करने का तरीका, और व्यवहार भी अन्य बच्चों से अलग हो जाता है।

रंगों की किलकारी

कला समाज का आईना है। जैसा समाज होता है कला उसी समाज को आईने की तरह अपनी कृतियों में प्रदर्शित करती है। ठीक उसी तरह बच्चे को समाज-निर्माता अर्थात कल का भविष्य कहा जाता है। इस तरह कला का बच्चे के साथ बहुत बड़ा सम्बन्ध है, क्योंकि जिस बच्चे में कला की समझ होती है वह हर क्षेत्र में सृजनात्मक रवैया रखता है। उसकी सोच सकारात्मक होती है। कलाकार को सृजनकर्ता भी कहा गया है, इसी तरह कल के भविष्य कहे जाने वाले बच्चों को हमेशा सृजनात्मक होना चाहिए। इसी सोच के साथ परिवर्तन द्वारा “बालघर आँगन” के बच्चों को “घरौंदा” से जोड़ा गया है। ताकि वह अपनी जिन्दगी का आधार सच्चाई के साथ, रोचक भी बना सकें। यहाँ आने वाले बच्चे आस- पास के आंगनबाड़ी केन्द्रों के होते हैं, जिनकी उम्र 5 साल के अन्दर होती है।

बच्चों की दुनिया वास्तव में बहुत निराली और सच्ची होती है। ये अपने धुन में मस्त होते है तभी तो जब बच्चों को रंगों के साथ खेलने का मौका मिलता है तब इनकी सृजनात्मकता देखते ही बनती है। बालघर के बच्चे जब घरौंदा क्लास करने के लिए आते हैं तो मैं सबसे पहले बच्चों के सामने रंग निकाल कर रख देता हूँ। कुछ बच्चे बिना किसी ब्रश की सहायता से सिर्फ अपनी नन्ही नन्ही उँगलियों से अपनी कलाकृति बनाते है वह वास्तव में बहुत ही रोचक होती है। इन कलाकृतियों में बच्चों की अपनी दुनिया होती है। बच्चों की दुनिया हमारी दुनिया से काफी अलग होती है। बच्चों से हमने सीखा कि आसमान नीला ना होकर लाल भी हो सकता है तो सूरज लाल की जगह काला भी हो सकता है। यह कल्पनाशीलता हम केवल बच्चों में देख सकते हैं। कुछ बच्चों ने काला सूरज बनाया, कुछ बच्चों ने मछली को पेड़ पर दिखलाया जो कि बहुत ही असाधारण कृति थी।

स्वच्छता को ध्यान में रखते हुए बच्चों के साथ कूड़ेदान बनाया गया जिसमें बच्चों ने अपने- अपने हाथ के छाप को लेकर बहुत ही मस्ती से सारा कार्य किया। सबसे खास बात, जो हम बड़ो में भी नहीं देख पाते है,

वो है सहयोग की भावना। जब हम बच्चों से कूड़ेदान पर बच्चों के हाथ की छाप ले रहे थे मैंने गौर किया कि कुछ बच्चों में सहयोग की असीम भावना है। वह खुद अपना कार्य कर, पीछे रह गए बच्चों के हाथ में रंग लगाकर उन्हें छाप के लिए प्रेरित कर रहे थे। बच्चों से हम बड़ो को भी सहयोग की इस भावना को सीखने का प्रयास करना चाहिए।

राजवर्द्धन !
घरौंदा (परिवर्तन)

बच्चों का रंगमंच

बच्चों में व्यवहारिक ज्ञान तथा गतिविधि के साथ – साथ कला के लिए रूचि होना भी आवश्यक हैं।

संगीत- कला एक ऐसा माध्यम हैं जिसे सुनकर मनुष्य तो क्या जानवरों में भी जान आ जाती हैं। इसी तथ्य को साकार करते हुये बालघर आँगन के बच्चों ने परिवर्तन परिसर की रंगमंडली टीम के साथ क्लास की। जिसमें बच्चों ने स्वतंत्र होकर बाल- गीत और कविता पाठ ,मुखौटा पहनकर एक्शन के साथ किया। इतना ही नही रंगमंडली की सहायता से बच्चों ने (सुर, लय, ताल) के साथ तरह – तरह के गानों का अभ्यास किया। मछली जल की रानी हैं , हाथी राजा – सूंढ़ हिलाकर चला, बंदर पेड़ पे बैठा है, क्या बंदर तू भूखा है और रंगमंडली के बच्चों द्वारा बनाये गये गीत (बहाना) गाकर सुनाया गया।

प्रमुख कार्यशाला एवं उसका प्रभाव

परिवर्तन परिसर में बालघर के बच्चों की क्लास करने हेतु विभिन्न प्रकार की कार्यशालाओं का आयोजन भी किया जाता है।

बालघर में इस वर्ष जिन कार्यशालाओं का आयोजन किया गया है उनमें प्रमुख कार्यशाला इस तरह है।

- खेल-खेल में ज्ञान अवलोकन
- गुनगुन कार्यशाला
- सेविका प्रशिक्षण
- नन्हें कदम कार्यशाला

बच्चों / सेविकाओं/ अभिभावकों के विकास से सम्बंधित अलग-अलग उद्देश्यों को लेकर "सेविका प्रशिक्षण कार्यशाला" का आयोजन किया जाता है। जिसका उद्देश्य इस प्रकार है :-

उद्देश्य

सेविका प्रशिक्षण कार्यशाला में विशेषज्ञ के रूप में पटना से आयी रीमा जी, कृति जी और सीमा जी ने सेविकाओं को बहुत ही आवश्यक और बुनियादी जानकारी प्रदान की। इस कार्यशाला का उद्देश्य सेविकाओं/ सहायिकाओं कोनयी- नयी गतिविधियों से अवगत कराना है ताकि वो इन गतिविधियों को सीख कर अपने केंद्र के बच्चों को और बेहतर ढंग से इसका लाभ दे पायें।

दोनों दिन प्रशिक्षण में भाग लेने वाली सेविकाओं की उपस्थिति :-

दिनांक	पंचायत	सेविका
29-3-19	9	84
30-3-19	9	92

नन्हें कदम कार्यशाला का उद्देश्य, आंगनबाड़ी केन्द्रों के बच्चों द्वारा परिवर्तन में सिखाई गयी गतिविधियों को अभिभावकों के बीच प्रस्तुत करना है। ताकि उन बच्चों के अभिभावक यह देख, समझ और परख सकें कि परिवर्तन आने से हमारे बच्चों में क्या- क्या बदलाव हुये हैं।

आंगनवाड़ी सर्वे

उद्देश्य :-

अपने कार्यक्षेत्र के 21 समुदायों के ऐसे 8 आंगनवाड़ी केन्द्रों का चयन किया गया जिन केन्द्रों की स्थिति बहुत ही ख़राब और पिछड़ी हुई थी और जहाँ बहुत सुधार की आवश्यकता थी। इस आंगनवाड़ी सर्वे के माध्यम से उन केन्दों में बच्चों के लिए लाभ पहुँचाना था जहाँ के बच्चे आवश्यक सुविधा का लाभ नहीं उठा पा रहे हैं।

चयनित आंगनवाड़ी केंद्र इस प्रकार हैं :-

क्र. स.	आंगनवाड़ी केंद्र	सेविका
1.	बंथू श्रीराम	बिंदु देवी
2.	बंथू श्रीराम	फूलमाला देवी
3.	संथू	निर्मला देवी
4.	संथू	मिंटू देवी
5.	संजलपुर	आरती देवी
6.	संजलपुर	निभा देवी
7.	धर्मपुर	साधना देवी
8.	खेम भटकन	संगीता देवी

आंगनवाड़ी के तीन चरण का सर्वे

आंगनवाडी सर्वे को तिन चरण में पूरा किया गया, प्रथम चरण के सर्वे के बाद प्रमुख रूप से तिन समस्याओं को चिन्हित किया गया जो इस प्रकार से था

- सेविका का समय से केंद्र पर नहीं पहुचना,
- विभाग से मिले शिक्षण सामग्रियों का उपयोग न होना
- बच्चों की व्यक्तिगत जरूरतों पर ध्यान न देना
- पानी पिने की समस्या अर्थात फ़िल्टर का उपयोग न होना आदि था।

उपरोक्त समस्याओं के समाधान हेतु परिवर्तन के द्वारा लगातार 8 महीने तक प्रयास किया गया इस बिच प्रत्येक केंद्र से संपर्क भी किया गया एवं उपरोक्त समस्याओं के समाधान का रास्ता भी दिखाया गया साथ ही साथ कहीं कहीं अलग अलग प्रकार के गतिविधियों का भी मदद लिया गया। आज सर्वे किये हुए केन्दों के समस्याओं में सुधार दिख रहें हैं।

फीडबैक (अभिभावक) :-

- **गुंजा की माँ (बंथू सलोना) :-** परिवर्तन जाने से पहले मेरी बेटी बहुत गन्दा रहती थी। मै कितना भी इसे साफ़ रखती फिर भी बाहर जाकर मिट्टी में खेलती और खुद को गन्दा कर लेती थी। कभी-कभी मिट्टी खा भी जाती थी। पर जबसे यह परिवर्तन जाने लगी है तबसे यह गन्दा में नहीं खेलती है। अगर कभी इसके कपड़े पर दाल गिर भी जाय तो यह रोने लगती है। मुझे तुरंत साफ़ करना पड़ता है। और यह कहती भी है कि परिवर्तन में कहा गया है- हमेशा साफ़ कपड़ा पहने के लिये।
- **सीमा देवी (गोठी) :-** मेरे बेटे सुप्रीत के स्वभाव में परिवर्तन जाने से बहुत बदलाव आया है। पहले यह हमको बहुत तंग करता था। पूरा घर का सामान इधर- उधर करता। अपनी शैतानी से ह्म सबको परेशान करता रहता था पर परिवर्तन जाने से अब यह घर पर भी, परिवर्तन की ही कहानी कविता करता रहता है। शैतानी तो वो अब भी करता है, पर पहले की शैतानी और अबकी शैतानी में बहुत अंतर है।
- **लाली की दादी (बंगरा उज्जैन) :-** लाली की दादी जो बंगरा उज्जैन में रहती है कहती है कि “यहाँ परिवर्तन में सिखाने के लिये बहुत से साधन हैं और यहाँ का कैम्पस भी कितना साफ़- सुथरा है ,ऐसा आंगनबाड़ी को भी होना चाहिए। लाली यहाँ से जो भी सीख के जाती है वो घर में भी करती है और हमलोगों को भी कर के दिखाती है।”
- **संध्यादेवी :-** मीठी सिंह जो नरेन्द्रपुर से आती है उसकी मम्मी है का कहना था कि “मीठी पहले परिवर्तन आने के नाम से ही रोने लगती थी और हमको बहुत परेशान करती थी लेकिन अब यहाँ आने के लिये रोज सुबह- सुबह खुद तैयार होने लगती है। वो यहाँ से जो भी सीखती है घर पर हमको कर के दिखाती है।

सेविका की बातें

प्रभावती देवी : - गाँव बाबू भटकन

यह सेविका शुरु में परिवर्तन के कार्यो से नफरत करती थीं।कोई भी बात करने पर हमेशा बोला करती थीं - आपलोग आफिस के लोगों को सूचना देने के बाद ही हमारे साथ जुड़कर काम कीजिए। लेकिन परिवर्तन बालघर कार्यकर्ताओं के लगातार किये गए प्रयासों के बाद उन्होंने धीरे- धीरे अपनी सोच को बदला और मन में विश्वास की भावना अपनाते हुवे साथ में जुड़कर काम करने के लिए तैयार हुईं। आज उनके केंद्र के बच्चों में काफी बदलाव दिखता हैं। उनके केंद्र के बच्चे बहुत ही चंचल और तेज़ हैं जो नियमित रूप से बालघर क्लास में जुड़े रहने पर विभिन्न गतिविधियों से अवगत होकर आपने केंद्र के अन्य बच्चों को भी निरंतर अवगत करते रहते हैं। साथ ही साथ किसी कार्यशाला में बड़े ही उत्साह के साथ अपने आप को अभिव्यक्त करते हैं। सेविका भी बच्चों को प्रेरित करती हैं और सेविका प्रशिक्षण में भाग लेती हैं एवं जो कुछ सीखतीं हैं बच्चों को भी हाव – भाव के साथ में सिखाती हैं।

फीडबैक(आंगनवाड़ी सेविका)

- परिवर्तन हमारे समाज के लिये बहुत कुछ कर रहा है। समाज के सबसे अहम् हिस्सा की शुरुआत होती है बच्चों से। मै परिवर्तन के बालघर आँगन को बहुत- बहुत बधाई देती हूँ कि जिन्होंने हमारे आंगनवाड़ी के छोटे- छोटे बच्चों को परिवर्तन ले जाकर उचित शिक्षा दी है। सिर्फ बच्चों को ही नहीं परिवर्तन हम सेविकाओं के लिये भी कार्यशाला कराता है।
- परिवर्तन के माध्यम से हमें बहुत कुछ सीखने का मौका मिलता है। परिवर्तन द्वारा जो TLM (टीचिंग लर्निंग मटेरियल) दिया जाता है उससे बच्चों को समझाना बहुत आसान हो जाता है। परिवर्तन से मैडम केंद्र पर आकर हमलोगों को हमारा उद्देश्य समझाती हैं। जहाँ मैं कुछ भूल जाती हूँ वहाँ वह खुद प्रदर्शित करके हमलोगों को समझाती हैं। परिवर्तन जाने वाले बच्चों में बहुत से बदलाव देखने को मिलते हैं।

बच्चों की केस स्टोरी (बदलाव की कथा)

1. नाम – सुप्रीत कुमार
उम्र – 5 वर्ष
पिता –
ग्राम – गोठी

सुप्रीत गोठी का रहने वाला है। वह तीन भाई है और तीनों बालघर के छात्र रह चुके हैं। इसकी माँ अपने बच्चों के लिए बहुत सजग रहती है। सुप्रीत की माँ हमेशा उसे साफ़ रखती है और केंद्र की पोशाक पहनाकर भेजती है। मै जब भी गोठी जाती थी तो वह सुप्रीत के बारे में मुझसे बात करती थी। सुप्रीत की एक खास बात यह है कि वह हमेशा हँसता और मुस्कुराता रहता है। वह अपने गाँव में जाकर जो बच्चे आंगनवाड़ी नहीं जाते हैं उन्हें इकट्ठा करके बालगीत और कहानी सिखाता है।

2. नाम - मीठी कुमारी
उम्र – 5 वर्ष
पिता –
ग्राम – नरेन्द्रपुर

मीठी पहले अपने मामा के घर रहती थी। उसे अपने माता पिता से ज्यादा लगाव भी नहीं था इसलिए वह यहाँ रहना भी नहीं चाहती थी। वहां पर वह आंगनवाड़ी केंद्र भी नहीं जाती थी। वह स्वभाव से बहुत ही झगड़ालू लड़की थी। वह हमेशा दूसरे बच्चों से लड़ती रहती थी। एक बार मीठी अपने भाई कुणाल के जन्मदिन पर नरेन्द्रपुर आई। उसका भाई कुणाल बालघर आँगन नियमित क्लास के लिए आता था। उसके साथ वह भी परिवर्तन आने लगी। पहले तो बहुत रोती थी फिर धीरे- धीरे उसे यहाँ मन लगने लगा और आज वह नियमित आती है और साथ ही साथ अब वह मामा के घर जाना भी नहीं चाहती है।

3.नाम – बालवीर कुमार
उम्र – 5 वर्ष
पिता –
ग्राम – धर्मपुर

बालवीर क्लास के दौरान बालघर आँगन में हमेशा आता है, उसकी एक बात बहुत बुरी थी कि वह बहुत गन्दा रहता था और उसका कपड़ा हमेशा फटा हुआ रहता था। एक दिन जब बच्चा लाने मैं (मधुबाला), धर्मपुर जा रही थी तो रास्ते में मुझे बालवीर की माँ मिली। मै गाड़ी से उतर कर उसकी माँ से बालवीर की साफ-सफाई की बात की तो उसकी माँ बहुत तरह की परेशानी बतानी लगी कि उसके घर पर चार बच्चे हैं और उसे खुद खेत का काम भी करना पड़ता है इसलिए वह सफाई का ध्यान नहीं रख पाती है। फिर भी मेरे समझाने पर वह

दूसरे दिन से बालवीर को सफाई के साथ केंद्र के पोशाक में भेजने लगी । बालवीर अपने क्लास का बहुत ही चंचल और समझदार लड़का है । वह कोई भी गतिविधि बहुत जल्दी सीख जाता है । और आज परिणाम यह है कि उसे किसी तरह की गतिविधि करने में कोई झिझक महसूस नहीं होती है बल्कि उसे हर गतिविधि में आगे आता देख अन्य बच्चे भी प्रेरित होकर आगे आने की कोशिश करते हैं ।

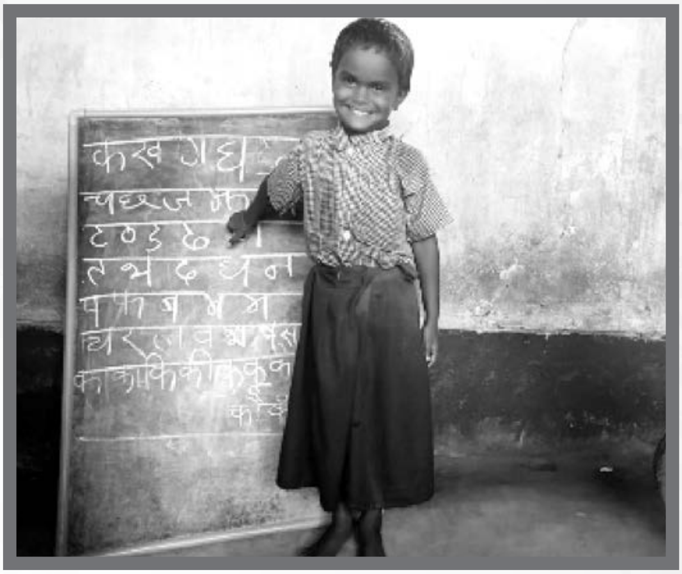

4.नाम – नंदनी कुमारी

उम्र – 4 वर्ष

बंथू सलोन

नंदनी बालघर आँगन की नियमित छात्रा है । एक दिन की बात है जब मैं केंद्र के क्लास के लिए उसके केंद्र पर पहुंची तो उस दिन गांव में कोई पर्व था इसलिए बच्चे केंद्र पर बहुत कम थे पर जैसे ही नंदनी की नजर मुझपर पड़ी तो वह बहुत खुश हो गयी । वह एक बच्चे को अपने साथ लेकर गांव में बच्चों को इकट्ठा करने निकल गयी और देखते ही देखते वह केंद्र पर 15 से 20 बच्चों को इकठ्ठा कर ले आई । फिर वह बालघर में सीखी गयी गतिविधियों को और बालगीतों को खुद से कराने लगी । मैं यह सब देख कर बहुत ही आश्चर्यचकित थी कि इस छोटी सी बच्ची में कितनी (लीडरशिप)नेतृत्व की भावना है । फिर थोड़े देर बाद वह मेरे पास आकर बोली “मैडम जी आप भी करायें ना” । उसका यह आत्मबल देखकर मै और सेविका भी चकित थी । वह हमेशा बालघर नियमित रूप से आती है और दूसरे बच्चों के साथ बालगीत और गतिविधि कराती है ।

5. नाम – आर्यन कुमार

उम्र – 5 व

ग्राम – मियां के भटकन, शर्मा टोला

आर्यन मियां केभटकन का रहने वाला है । आर्यन की सबसे बड़ी बात यह है कि आर्यन की माँ नहीं है फिर भी वह बहुत ही अनुशासित बच्चा है । उसका पालन- पोषण और शिक्षा का दायित्व उसकी नानी निभाती है । आर्यन जब पहली बार परिवर्तन बालघर आँगन आया तो उसको यहाँ आकर बहुत अच्छा लगा फिर जब भी परिवर्तन की गाड़ी जाती तो वह पहले से ही यहाँ आने के लिए तैयार रहता था । वह यहाँ जो कुछ भी सीखता उसे अपने केंद्र पर जाकर बच्चों को सिखाता है तथा परिवर्तन में क्या- क्या है उसे भी बच्चों के साथ साझा करता है ।